सचित्र बाल कथाएँ

विवेक का आश्रय

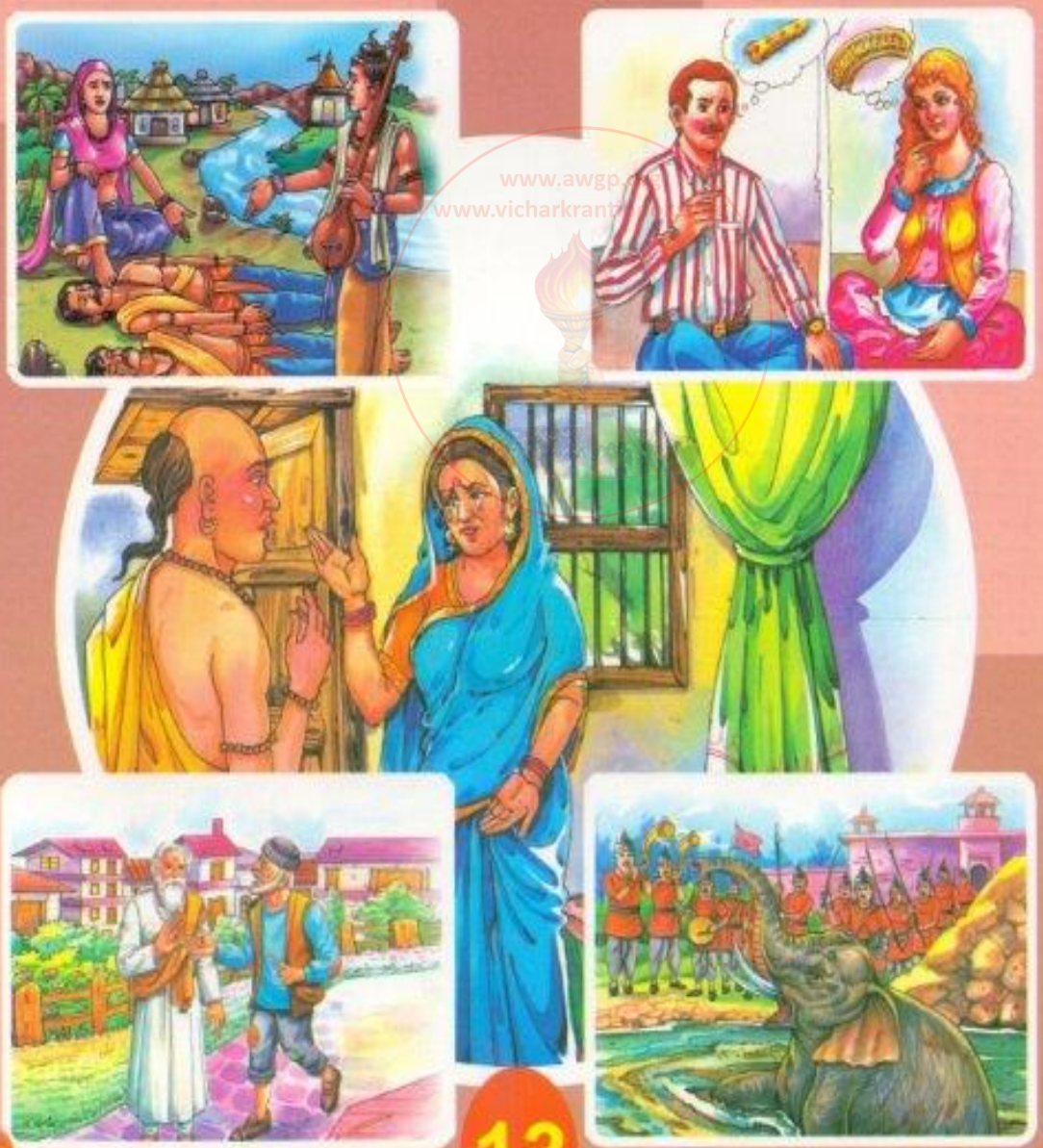

13

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

माँगूँगा तो भगवान से

महाराज विक्रांत एक बार जंगल में भटक गए। रात में एक किसान के यहाँ शरण मिली उसने महाराज की बहुत भावनापूर्वक आवभगत की। महाराज विदा हुए तो राजमुद्रा अंकित पहचानपत्र देकर कहा—"कभी कष्ट हो, कुछ आवश्यकता हो तो सहर्ष राजदरबार में इसे लेकर चले आना।"

संयोगवश एक बार किसान की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई उसके पास धन नहीं रहा। उसे पिछली घटना याद आई कि राजा ने मुझे मदद देने को कहा था और वह राजदरबार में पहुँचा। उस समय सम्राट पूजाघर में थे। आदेशपत्र के कारण प्रहरियों ने उसे वहाँ तक जाने दिया। किसान ने देखा महाराज स्वयं भगवान के सामने हाथ फैलाए कुछ माँग रहे हैं। यह देखकर उसका आत्मविश्वास जागा। उसने सोचा जब भगवान ही सबको देता है तो मनुष्य से क्या माँगा जाए? वह वापस लौट पड़ा। महाराज ने देख लिया तो रोका और कुछ देने की इच्छा प्रकट की। इस पर किसान ने कहा—"महाराज आया तो माँगने था, पर अब उसी से मागूँगा जिससे आप भी माँगते हैं।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राजा विश्वामित्र ब्रह्मर्षि बने

विश्वामित्र एक राजा थे। एक बार वे वशिष्ठ मुनि के आश्रम पर अपनी सेना सहित पहुँचे। वशिष्ठ मुनि के पास एक गाय थी जो माँगने पर सब कुछ दे देती थी। अपनी कामधेनु की शक्ति से महर्षि ने उनका यथोचित सत्कार किया। उस गौ का प्रभाव देखकर राजा विश्वामित्र ने उसे लेना चाहा। स्वेच्छा से देने से इनकार करने पर वे जबरदस्ती ले जाने लगे। कामधेनु ने महर्षि से अनुमति प्राप्त कर अपने शरीर से लाखों

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सैनिक प्रकट करके विश्वामित्र की सेना को पराजित कर दिया। ब्रह्मतेज का यह बल देखकर उन्होंने क्षात्र धर्म त्यागकर ब्राह्मणत्व प्राप्त करने का निश्चय किया। जीवन की दिशाधारा ही बदल गई।

''धिक् बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्मतेजो बलं बलम्।'' उन्होंने महान तप किया। बार-बार तप के नाश से भी वे निराश नहीं हुए। तपस्या के प्रभाव से विश्वामित्र नई सृष्टि रच सकने में समर्थ हुए। ब्रह्मा ने इसे रोककर उन्हें अपनी तप:शक्ति को जन-कल्याण में नियोजित करने का आदेश दिया। उनकी 'अहं' पर विजय तथा तपोबल से अर्जित सामर्थ्य ने उन्हें 'ब्रह्मर्षि' पद से सम्मानित किया। कहने का मतलब यही है कि एक बार जब इस सामर्थ्य का ज्ञान हो जाता है व सुनियोजन की दिशा मिल जाती है तो महामानव-ऋषिजन इसे लोकमंगल के अतिरिक्त और किसी कार्य में व्यर्थ नष्ट नहीं करते।

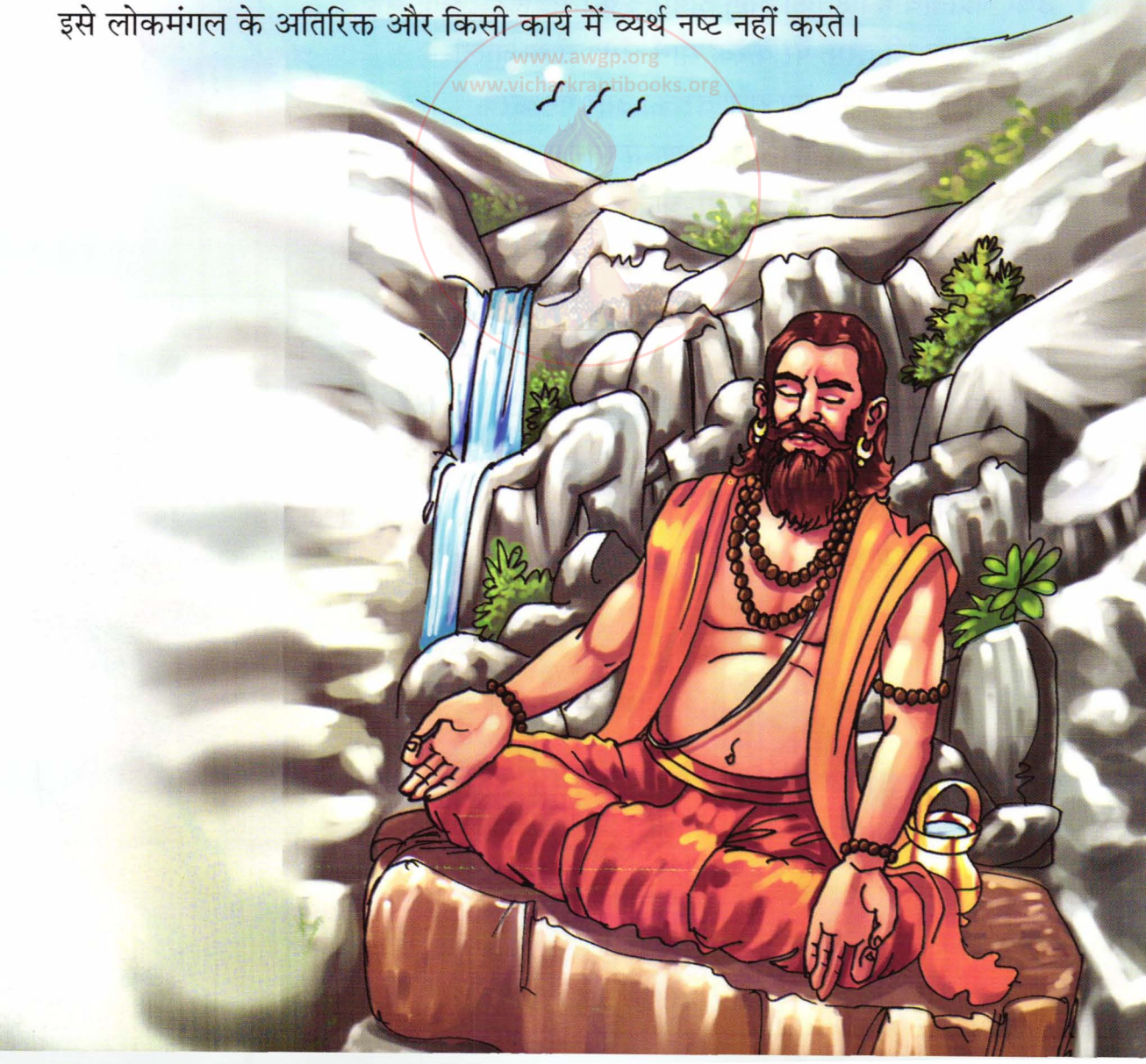

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विवेक का आश्रय

एक मंदिर के एक कमरे में एक साधु रहते थे। एक दिन साधु लेटे हुए थे और सोने की तैयारी कर रहे थे तो कई ज्ञानी व्यक्ति इकट्ठे हो गए। साधु को पूर्व की ओर पैर किए लेटे देखकर एक ज्ञानी बोला—"पूर्व में जगन्नाथ भगवान विराजते हैं, उधर पैर करना पाप है।" साधु पश्चिम की ओर पैर करके लेट गए तो दूसरा बोला—"महाराज, पश्चिम में द्वारिकापुरी है, वहाँ भगवान कृष्ण का निवास है। यह तो आप योगेश्वर का अपमान कर रहे हैं।" साधु उत्तर की ओर पैर करके लेटने लगे तो तीसरे ने कहा—"अरे बाबा जी, उधर बद्रीनाथ हैं। उनका आप अपमान कर रहे हैं।" अत: वह साधु दक्षिण की तरफ पैर करके सोने लगे। चौथा बोला—"महाराज! आप भगवान रामेश्वर की ओर पैर करके उनका अपमान कर रहे हैं।" साधु क्षणभर सोचकर बोला—"आप लोगों की सारी बातें सुन लीं। अब मुझे जिधर ठीक लगेगा मैं उधर पैर करके सोऊँगा।" विद्वानों के मत में विरोध दिखाई दे तो अपने विवेक से काम लेना ही अच्छा है। यह कहकर महात्मा अपनी इच्छानुसार पैर करके चुपचाप सो गया।

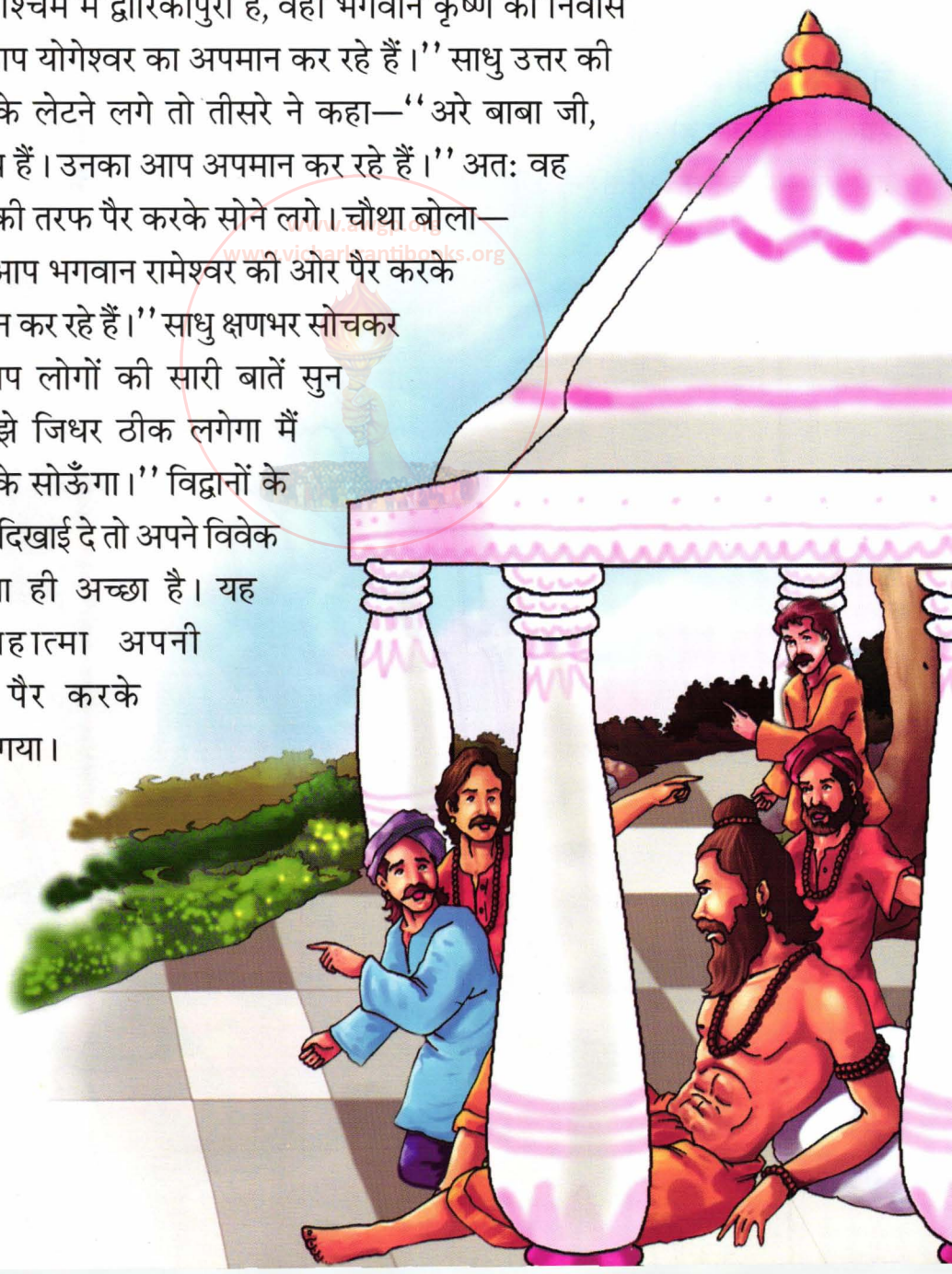

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहज शालीनता

एक बार विवेकानंद रेल द्वारा सफर कर रहे थे। स्वामी विवेकानंद रेल के जिस डिब्बे में सफर कर रहे थे, उसी डिब्बे में कुछ अँगरेज यात्री भी थे। उन अँगरेजों को साधुओं से बहुत चिढ़ थी। वे साधुओं की खूब निंदा कर रहे थे। साथ वाले साधु यात्री को भी गाली दे रहे थे। उनका विचार था कि वह साधु अँगरेजी नहीं जानता होगा। उन दिनों अँगरेजी जानने वाले साधु होते भी नहीं थे।

बड़े स्टेशन पर हजारों व्यक्ति विवेकानंद का स्वागत करने उपस्थित थे जिनमें विद्वान एवं अधिकारी व्यक्ति भी थे। अँगरेजी में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर स्वामीजी अँगरेजी में ही दे रहे थे। ऐसी अच्छी अँगरेजी बोलते देखकर अँगरेज यात्री स्तब्ध रह गए और अवसर मिलने पर नम्रतापूर्वक पूछने लगे कि आपने हम लोगों की बातें सुनीं और बुरा माना होगा? स्वामीजी ने अपनी सहज शालीनता से कहा—"मेरा मस्तिष्क अपने ही कार्यों में इतना अधिक उलझा हुआ था कि आप लोगों की बातें सुनते हुए भी उन पर ध्यान देने और उनका बुरा मानने का अवसर ही नहीं मिला।" ऐसी थी विवेकानंद की महानता और शालीनता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वावलंबी बालक

फ्रांसीसी गायिका मेलिथॉन के पास एक बार कोई फटेहाल व गरीब लड़का आ गया। मेलिथॉन उसे देखकर दुखी हो गईं और बोलीं—"बेटे! तुम्हारा क्या नाम है और क्या काम है?" बालक ने कहा—"जी, मेरा नाम पियरे है और एक निवेदन करने आया हूँ। मेरी माँ बीमार हैं। न तो उसका इलाज कराने के लिए मेरे पास पैसे हैं और न ही दवा तथा खाना खरीद सकता हूँ।" मेलिथॉन ने पियरे की बात को बीच से ही काटकर कहा—"अच्छा तुम्हें आर्थिक सहायता चाहिए। बताओ कितने पैसे दूँ?"

"जी नहीं" पियरे बोला—"मैं मुफ्त में पैसे नहीं लिया करता। मैं तो यह निवेदन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करने आया था कि मैंने एक कविता लिखी है। आप उसे संगीत सभा में गाने की कृपा करें। इसके बाद जो उचित समझें दे दें।''

मेलिथॉन बड़ी प्रभावित हुईं। अगले दिन जलसे में उसने वह कविता गाई। करुण स्वरों में गाई गई वह कविता सुनकर श्रोताओं की आँखें भीग गईं। उस कविता पर कई लोगों ने अच्छा पुरस्कार दिया। मेलिथॉन सारी एकत्रित धनराशि लेकर पियरे की रुग्ण माता के पास पहुँची और उसका हकदार पियरे को ही बताते हुए उन्होंने सब की सब राशि पियरे को ही दे दी। बचपन से ही स्वावलंबन की शिक्षा देने वाली माता और उनके संस्कारी पुत्र पियरे की उन्होंने बहुत प्रशंसा की। ऐसे ही व्यक्तियों से समाज और राष्ट्र की उन्नति होती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वाद ने तप चाट लिया

एक तपस्वी थे, वे वन में रहकर घोर तप करने लगे। इंद्र घबराया, इतना कठोर तप करने वाला इंद्रासन का हकदार बन सकता है। ऐसा उपाय करना चाहिए कि तपस्वी का व्रत बीच में ही टूट जाए। इंद्र ने फुसलाने के लिए अप्सराएँ भेजीं। डराने को राक्षस भेजे। पर तपस्वी ज्यों के त्यों रहे, वे जरा भी डगमगाए नहीं। अबकी इंद्र को दूसरी तरकीब सूझी। वे भक्त का रूप धारण कर पकवान, मिष्टान्न लेकर पहुँचने लगे। तपस्वी ने पहले तो मना किया कि मैं यह सब नहीं खाता परंतु बाद में खा लिया और उनकी जीभ चटोरी हो गई। रोज उस भक्त की प्रतीक्षा करने लगे।

एक दिन वनपरी अपने घर ५६ भोग पकवान खिलाने का निमंत्रण देने आई। उसे खाकर तपस्वी बहुत प्रसन्न हुए। परी ने कहा—"आप मेरे घर ही निवास करें। इससे भी बढ़कर भोजन कराया करूँगी।" तपस्वी मान गए लालच जो आ गया और रोज-रोज पकवान खाते थे। परी पर मुग्ध हो गए और उसके साथ गांधर्व विवाह करने पर भी राजी हो गए। उनका तप भी भंग हुआ। इंद्र बहुत प्रसन्न हुए, बोले—"अन्य रस छोड़े जा सकते हैं पर स्वाद बड़ों-बड़ों की साधना चट कर जाता है।"

जो अपनी जीभ पर नियंत्रण रखता है, उसका स्वास्थ्य तो अच्छा रहता ही है, साथ ही वह जीवन में बड़े प्रलोभनों से भी बचा रहता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सबसे बड़ा मूर्ख

इस पृथ्वी पर बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें अंत समय तक यह ज्ञान नहीं हो पाता कि क्यों वे इस धरती पर जन्मे व क्या उन्हें करना है ? मखौल में ही वे जिंदगी काट देते हैं।

एक साधु तीर्थयात्रा पर निकले। मार्ग व्यय के लिए किसी सेठ से कुछ माँगा, तो उसने कुछ दिया तो नहीं, पर अपना एक काम सौंप दिया। एक बड़ा दर्पण हाथ में थमाते हुए कहा—"प्रवास काल में जो सबसे बड़ा मूर्ख आपको मिले उसे दे देना।" संत बिना गुस्सा हुए उसका काम कर देने का वचन देकर दर्पण साथ ले गए। बहुत दिन बाद वापस लौटे, तो सेठ को बीमार पड़े पाया। सेठ के पास जो इकट्ठा किया धन था, उससे वे अपना इलाज नहीं करा पाए और न किसी सत्कर्म में लगा पाए।

मरणासन्न स्थिति में संबंधी, कुटुंबी उनका धन-माल उठा-उठाकर ले जा रहे थे। सेठ जी को मृत्यु और धन के लुट जाने का दोहरा कष्ट हो रहा था। साधु ने सारी स्थिति समझी और दर्पण उन्हीं को वापस लौटा दिया और कहा—"आप ही इस बीच सबसे बड़े मूर्ख मिले, जिसने कमाया तो बहुत, पर सदुपयोग करने का विचार तक नहीं किया।"

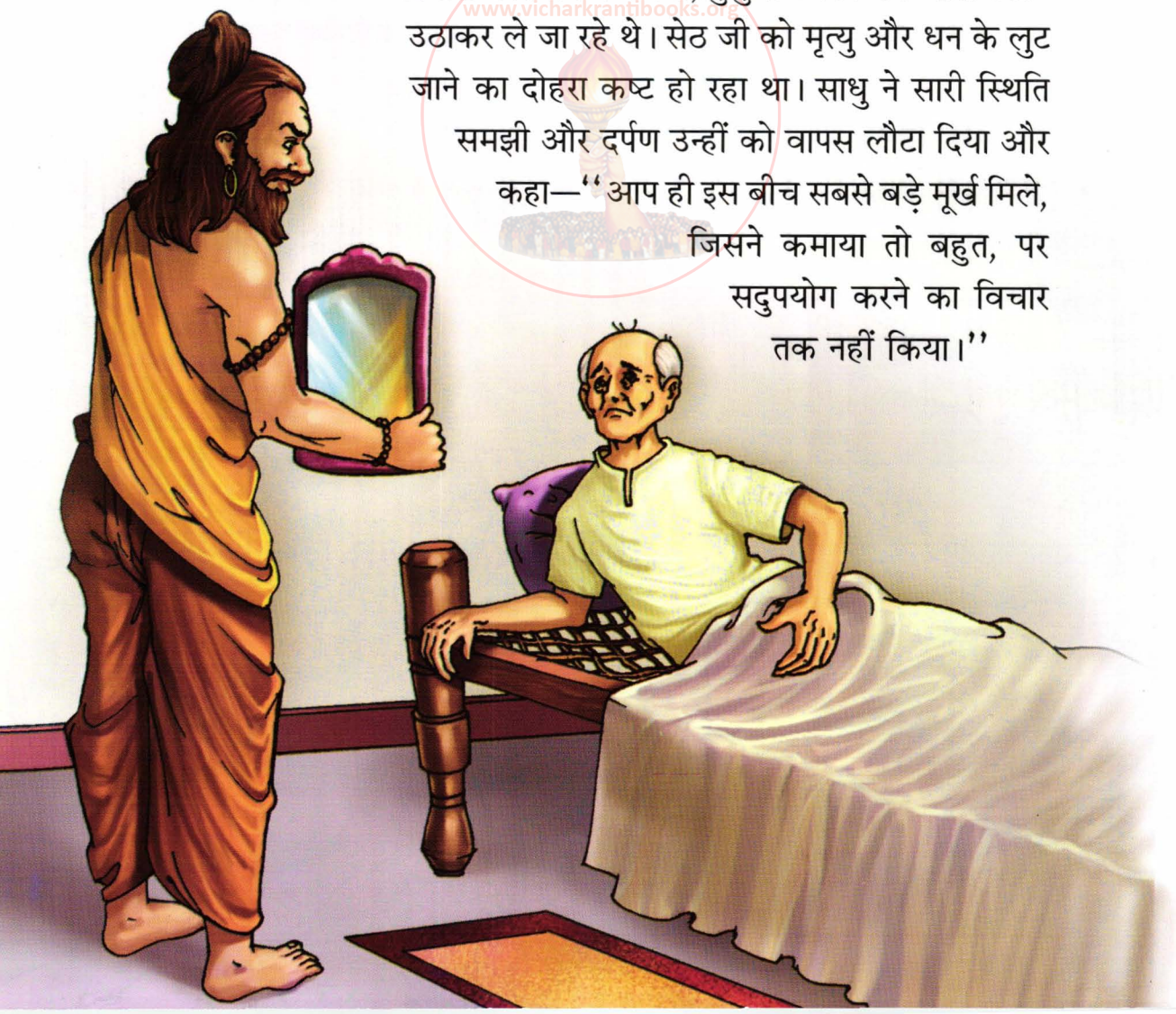

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सोने की ईंट कुएँ में

नया-नया ही एक व्यक्ति गुरु का शिष्य बना था। एक दिन उस शिष्य ने गुरु से कहा—"गुरुदेव! उपासना में मन नहीं लगता। भगवान की ओर मन ही नहीं लगता।" गुरु ने गंभीर दृष्टि डालकर शिष्य को देखा और जैसे कोई बात समझ में आ गई हो, बोले—"सच ही कहते हो वत्स! यहाँ ध्यान लगेगा भी नहीं। कहीं और चलकर साधना करेंगे, वहाँ ध्यान लगेगा। आज सायंकाल ही यहाँ से चल पड़ेंगे।"

"सायंकाल!" शिष्य कुछ चिंतित स्वर में प्रश्न कर बैठा, जिसका गुरु ने कोई उत्तर नहीं दिया। सूर्यास्त के साथ ही वे दोनों एक ओर चल पड़े। गुरु के हाथ में एक कमंडल था, शिष्य के हाथ में थी एक झोली, जिसे वह बहुत ध्यान से सँभाले हुए चल रहा था। मार्ग में एक कुआँ आया। शिष्य ने शौच जाने के लिए गुरुदेव से पूछा। दोनों रुक गए। बहुत सावधानी से उसने झोला गुरु के पास रखा और शौच के लिए चल दिया। जाते-जाते उसने कई बार झोले

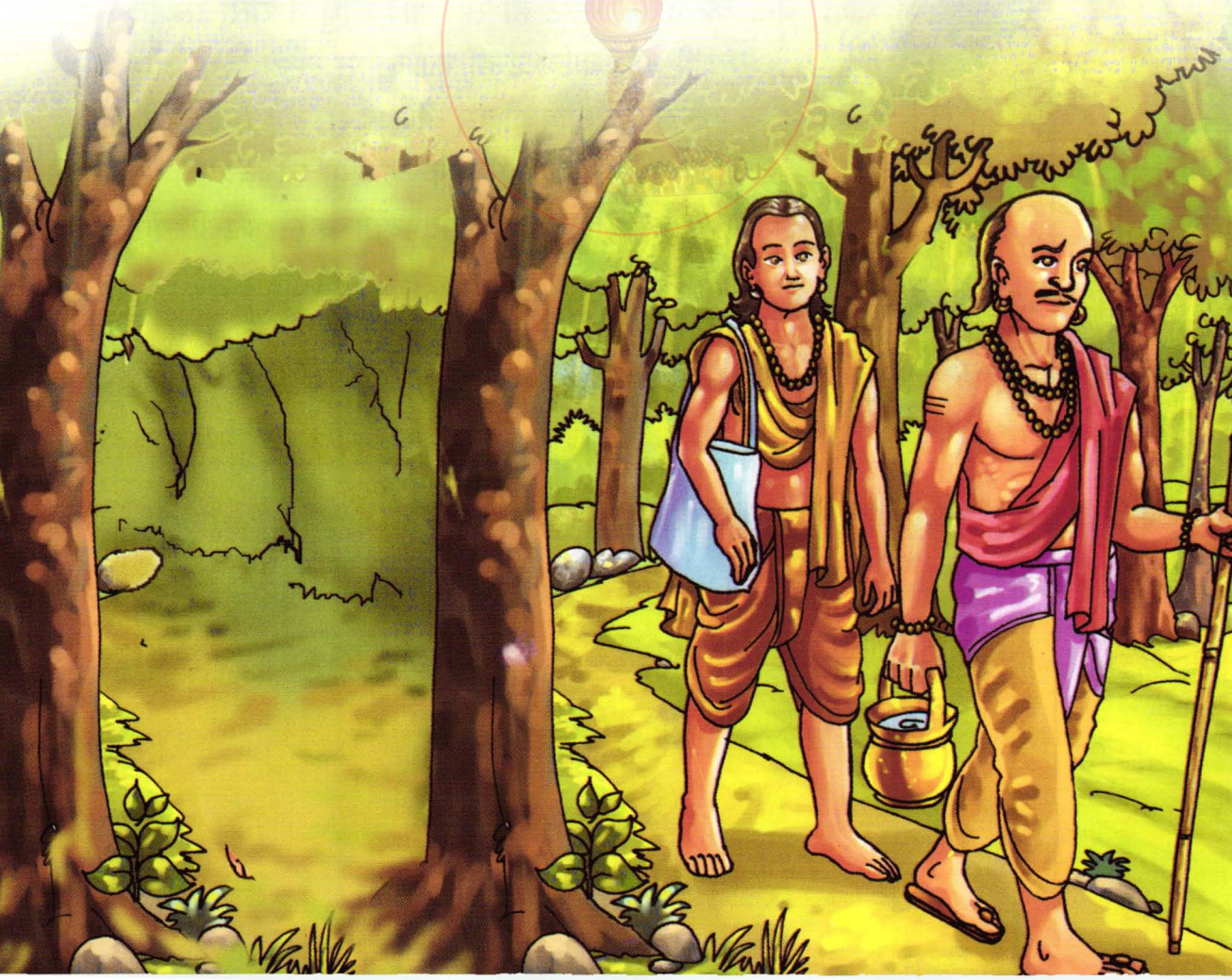

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर दृष्टि डाली। धड़ाम की आवाज शिष्य को आई! एक तीव्र आवाज भर सुनाई दी और झोले में पड़ी कोई वस्तु कुएँ में जा समाई। शिष्य दौड़ा हुआ आया और चिंतित स्वर में बोला—"भगवन्! झोले में सोने की ईंट थी सो क्या हुआ?" गुरु बोले—"कुएँ में चली गई, अब कहो तो आगे चलें, कहो तो फिर वहीं लौट चलें जहाँ से आए हैं, अब ध्यान न लगने की चिंता कहीं न रहेगी सब जगह ध्यान लग सकेगा।"

एक दीर्घ श्वास छोड़ते हुए शिष्य ने कहा—"सच ही गुरुदेव! आसक्ति का मन से परित्याग किए बिना कोई भी ईश्वर में मन नहीं लगा सकता।"

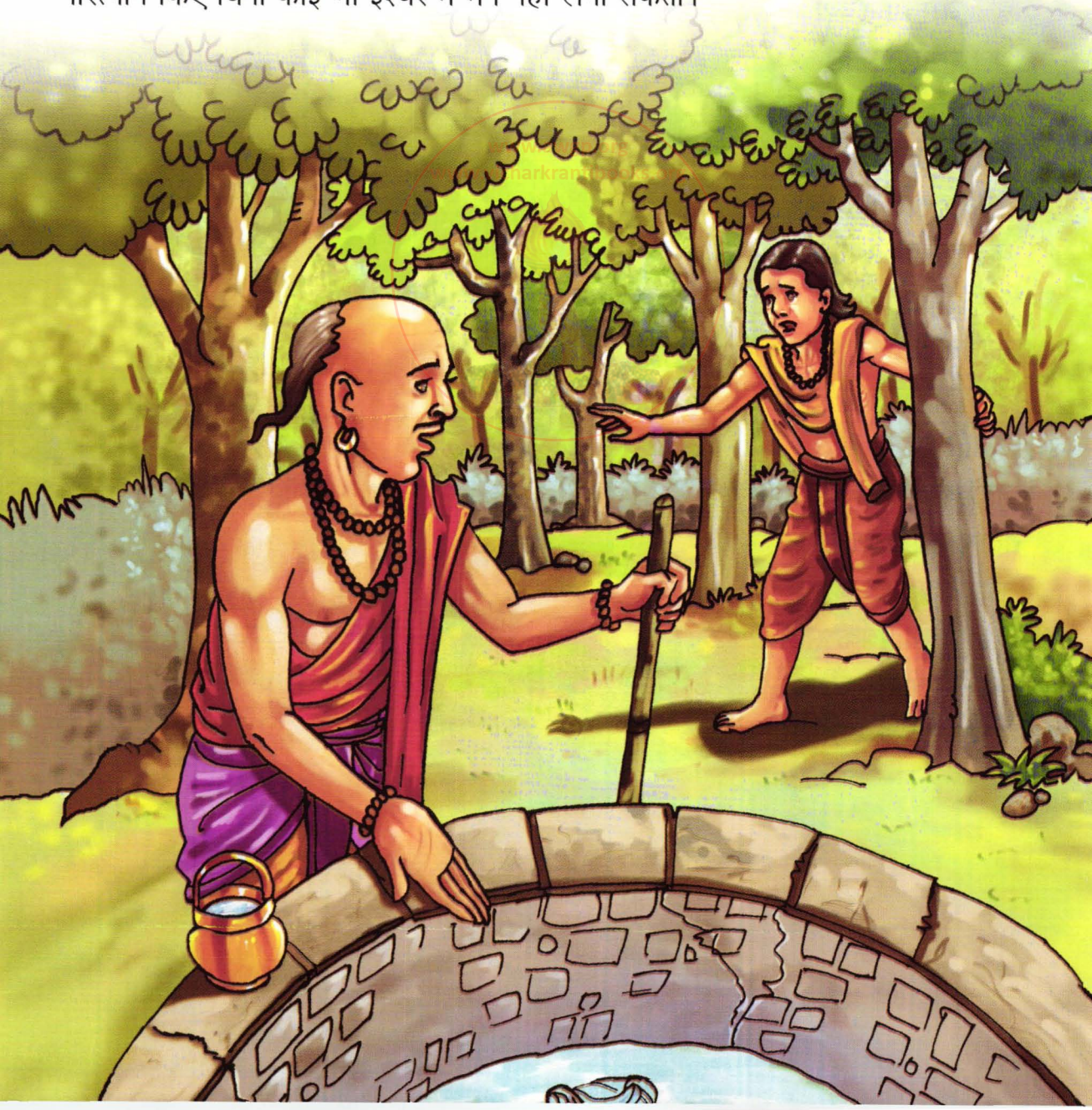

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन से सुंदर और कुछ नहीं

एक दिन देवलोक से एक विशेष खबर लिखकर निकाली गई, जिसने आकाश, पाताल तथा पृथ्वी तीनों लोकों में हलचल मचा दी। उसमें यह लिखा था—"अगले सात दिन तक लगातार श्री चित्रगुप्त जी की प्रयोगशाला के मुख्य द्वार पर कोई भी प्राणी असुंदर वस्तु देकर उसके स्थान पर सुंदर वस्तु प्राप्त कर सकेगा। शर्त यही है कि वह भगवान को मानता हो उन पर विश्वास रखता हो। इसकी परीक्षा वहीं देवलोक में कर ली जाएगी।"

बस फिर क्या था। सभी अपनी-अपनी बदलने वाली वस्तुओं की सूची तैयार करने लगे। याद कर-करके सबों ने अपनी उन वस्तुओं को लिख लिया जो उन्हें अच्छी नहीं लगती थी या सुंदर नहीं थीं। निश्चित तिथि पर देवलोक से कई विमान भेजे गए, जो सुविधापूर्वक सबों को देवलोक पहुँचाने लगे। जब सब लोग

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वहाँ आ गए तो विधाता ने अपने तीसरे नेत्र की योग दृष्टि से तीनों लोकों का अवलोकन किया, कोई बचा तो नहीं आने से। उन्होंने पाया कि स्वर्ग तथा पाताल में कोई शेष नहीं रहा। केवल पृथ्वी पर एक मनुष्य आराम से पड़ा अपनी मस्ती में डूबा आनंदमग्न है। पास जाकर उससे पूछा—"तात! तुमने हमारा आदेश नहीं सुना क्या? तुम भी चित्रगुप्त के दरबार में क्यों नहीं चले जाते और अपने पास जो गंदी, कुरुचिपूर्ण वस्तुएँ हैं, उन्हें बदलकर अच्छी वस्तुएँ ले आते, जानते नहीं कि अच्छाई को बढ़ाने से सम्मान बढ़ता है।"

वह व्यक्ति नम्रता और गंभीरता से बोला—"भगवन्! सुना तो था मैंने सर्वत्र तलाश भी की किंतु मनुष्य जीवन से बढ़कर सुंदर मुझे और कुछ लगा नहीं। भगवान ने वह दे दिया फिर और पाना ही क्या शेष रहा।" कहते हैं भगवान ने और सबको मनोवांछित वस्तुएँ दी और उसे सबका राजा बना दिया।

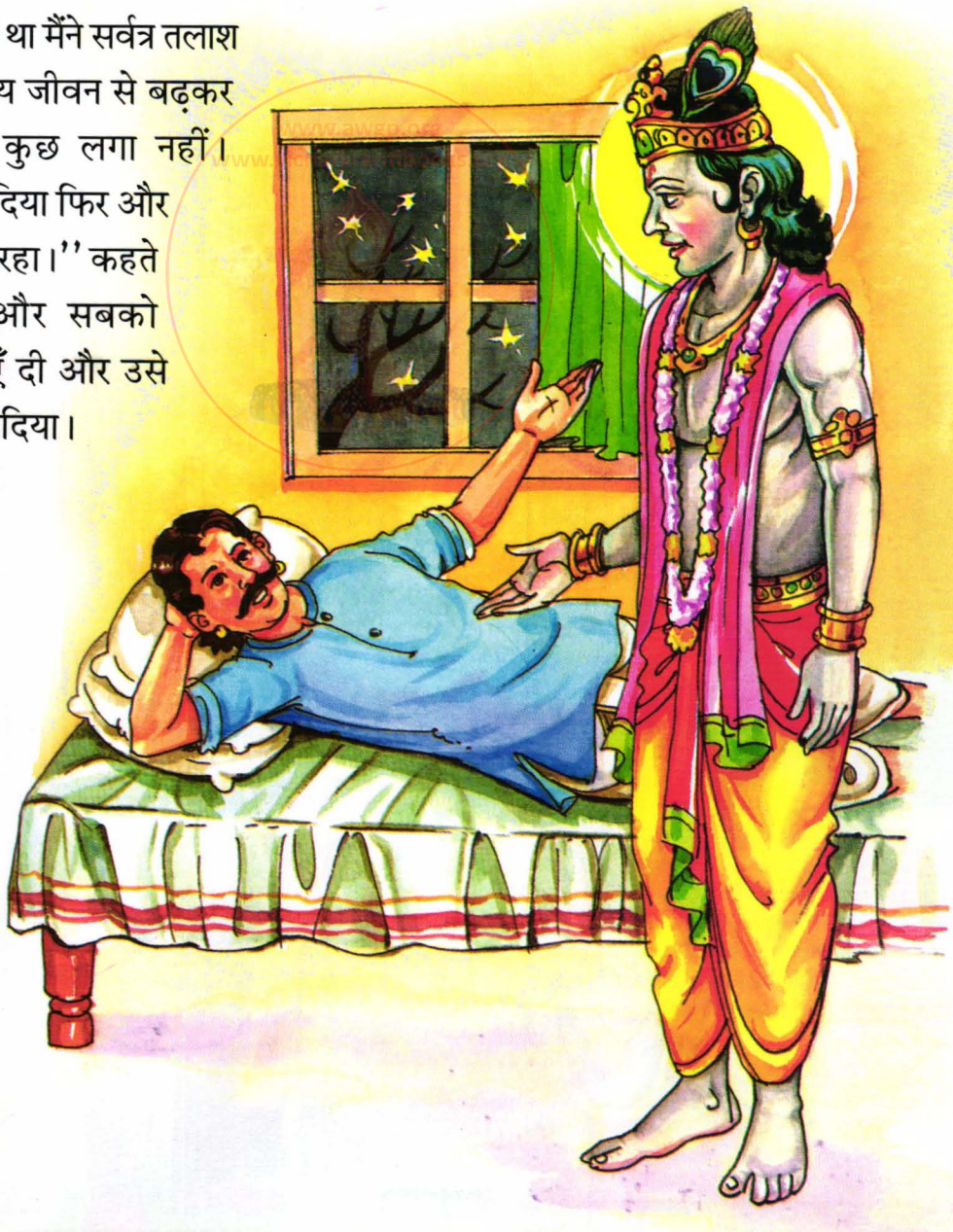

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रभु का निरादर

दक्षिण अफ्रीका के एक गिरजे में पादरी एण्ड्रूज प्रार्थना और प्रवचन करने गए। गांधीजी उन दिनों वहीं थे। वे भी उसी गिरजे में एण्ड्रूज का प्रवचन सुनने जा पहुँचे।

गोरों ने उन्हें काले होने के कारण गिरजे में जाने की अनुमति नहीं दी। उदास बापू वापस लौट आए।

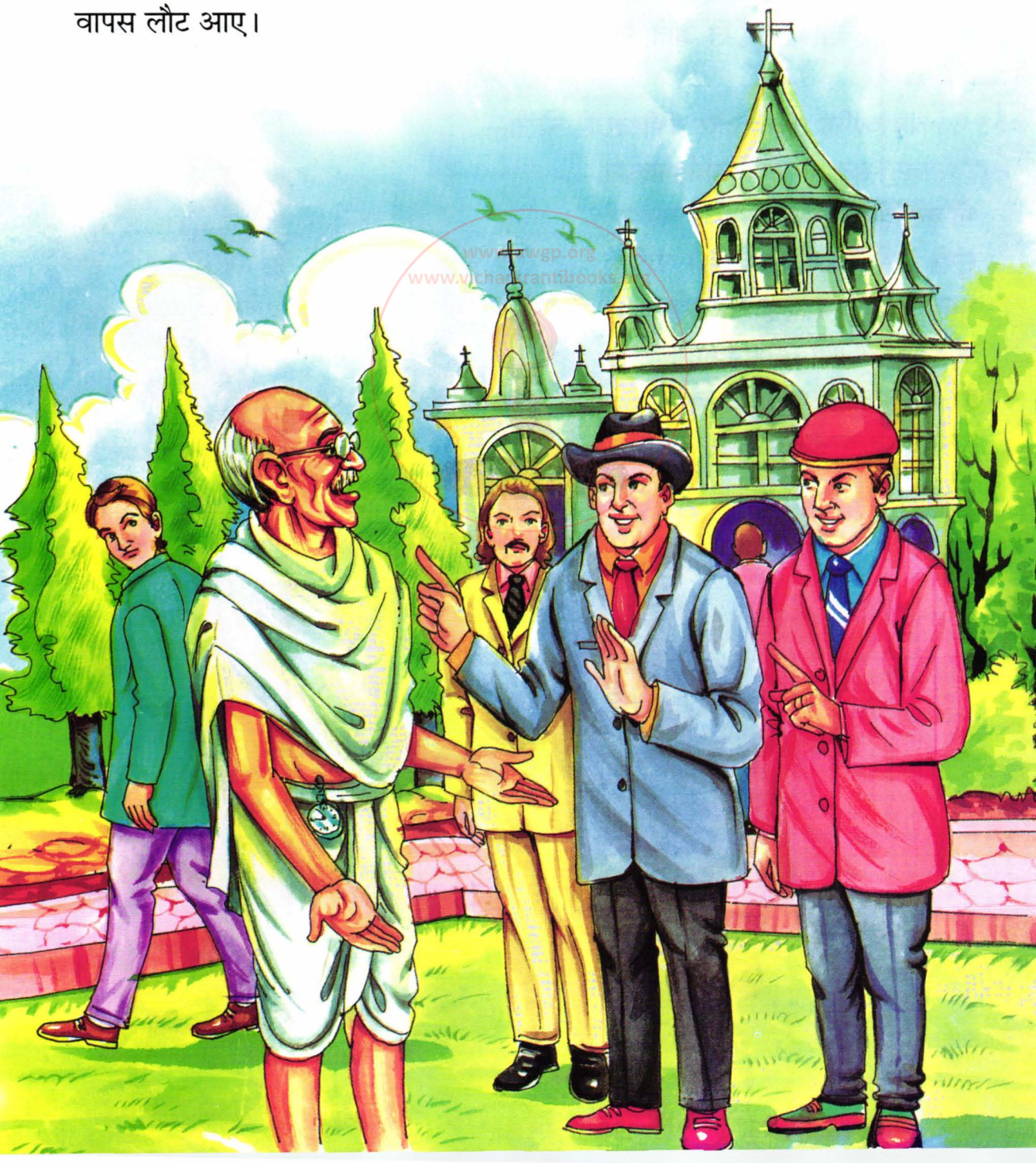

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भेंट होने पर बापू ने अपनी निराशा बताई। एण्ड्रूज आँखों में आँसू भर लाए और बोले—"मैंने तो ईश्वर और उसमें सच्चे रूप में आपकी ही चर्चा प्रवचन में की थी। गांधीजी की महानता पर ही प्रवचन किया था। सोचने लगे कितने दु:ख की बात है कि प्रभु को ही उसके मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं मिली।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आदर्श गृहस्थ मेरी व टॉमस

जब पति व पत्नी आपस में घुल-मिलकर रहते हैं तो घर स्वर्ग नजर आता है। तब चारों ओर आनंद ही आनंद होता है, परिस्थितियाँ चाहे कितनी ही विषम क्यों न हों!

मेरी और टॉमस का दांपत्य जीवन अनंत प्रेम से भरा-पूरा था। हर वर्ष विवाहोत्सव मनाते और छोटा-मोटा उपहार उस दिन एकदूसरे को भेंट करते। गरीबी के कारण वे महँगे उपहार न दे सकते थे।

उस वर्ष विवाह का दिन फिर आया। दोनों एकदूसरे के लिए उपहार देने की योजना बनाने लगे पर जेबें बिलकुल खाली थीं।

टॉमस ने पत्नी के सुनहरे बालों में लगाने के लिए एक सुनहरी क्लिप खरीदने की बात सोची। मेरी सोचने लगी, पति को हाथ की घड़ी के लिए सुनहरी चेन खरीदी जाए। दोनों के मनोरथ मन में थे। साधन जुट नहीं रहा था। दिन निकट आ गया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

टॉमस पुरानी घड़ी खरीदने वाले की दुकान पर गया और घड़ी बेचकर बदले में सुनहरी क्लिप खरीद लाया। मन में बहुत प्रसन्नता थी।

मेरी क्या करती, वह सुनहरे बाल खरीदने वाले की दुकान पर गई और अपने घुँघराले बाल कटाकर मिले पैसे से घड़ी की चेन खरीद लाई। सिर पर टोपा लगा लिया।

दिन आया, उपहार देने के लिए। एक ने दूसरे की ओर हाथ बढ़ाया। क्लिप कहाँ लगे बाल नदारद। चेन कहाँ बँधे घड़ी गायब। पूछने पर तथ्य खुला। शोभित न हो सकने पर भी इन उपहारों ने एक दूसरे का दिल सदा-सदा के लिए जीत लिया। दोनों की आँखों में प्रेम के आँसू भरे थे। इस तरह मना वह विवाह दिवसोत्सव।

परस्पर प्रेम और सहकार से भरा हुआ परिवार ही धरती का स्वर्ग होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नम्रता की शिक्षा

देश-विदेश के पंडितों का एक शास्त्रार्थ हुआ। राजा ज्ञानसेन इसी बहाने विद्वानों का सत्कार करते थे। धन और मान सभी को मिलता था। पर शास्त्रार्थ में जो विजयी होता था, उसके मार्गदर्शन में अन्यान्यों को चलना पड़ता था। उन दिनों अपनी-अपनी हाँकने और मत-मतांतर खड़े करने की एक प्रकार से प्रथा भी चल पड़ी थी।

उस शास्त्रार्थ समारोह में विद्वान भारवि विजेता घोषित किए गए। उपस्थित विद्वानों ने उनका नेतृत्व स्वीकार किया। विजेता का सम्मान प्रदर्शित करने के लिए राजा ने उन्हें हाथी पर बिठाया। वे स्वयं चँवर डुलाते हुए उनके घर तक ले गए। भारवि जब इस सम्मान के साथ घर पहुँचे तो उनके माता-पिता की खुशी का ठिकाना न रहा। घर लौटकर सर्वप्रथम उनने अपनी माता को प्रणाम किया। पिता की ओर थोड़ा सा सिर झुकाकर अभिवादन भर कर दिया।

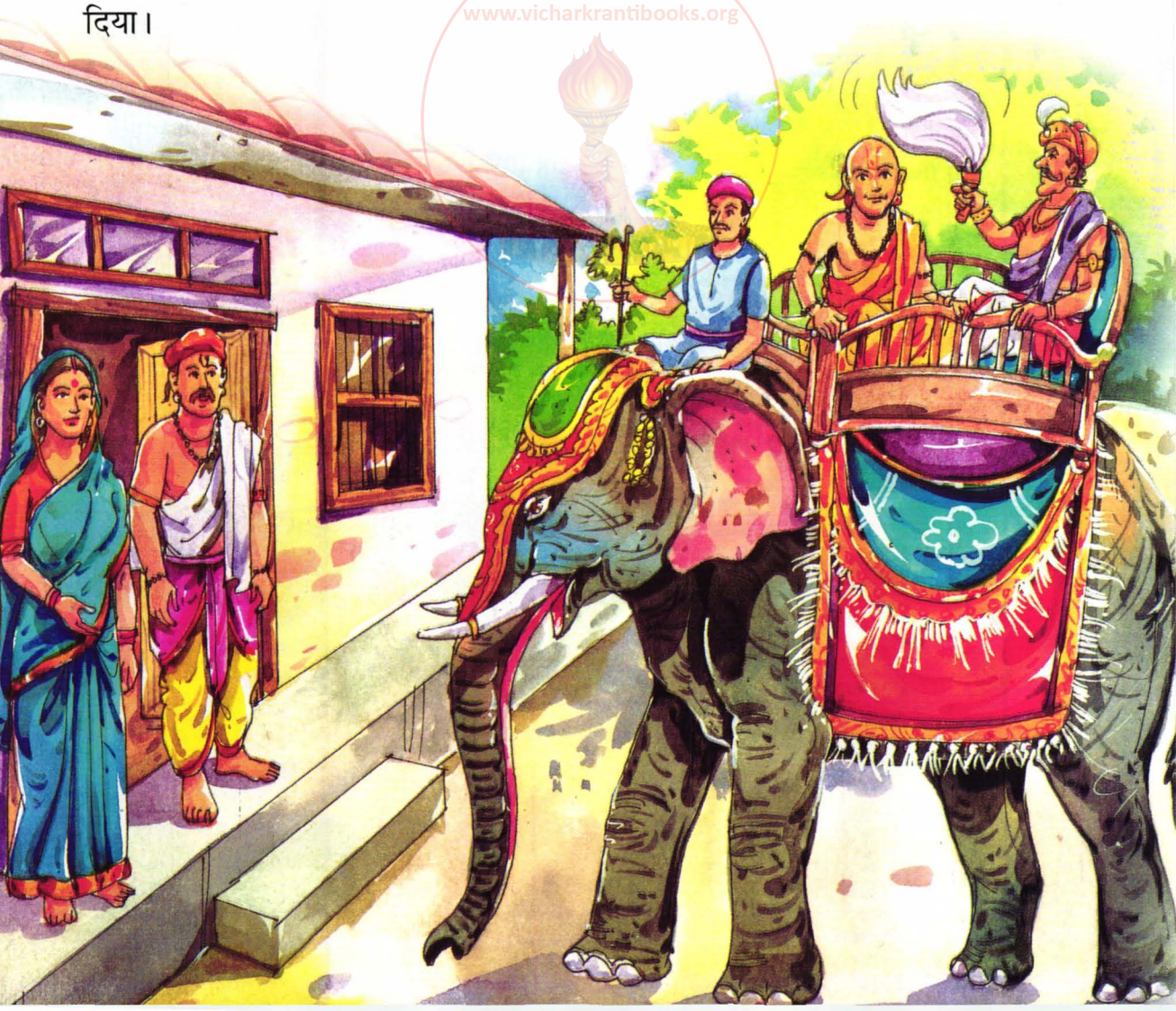

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माता को यह अच्छा नहीं लगा। झिड़ककर साष्टांग दंडवत के लिए संकेत किया, सो उन्होंने कहना मान लिया। पिता ने सूखे मुँह से 'चिरंजीव' भर कह दिया।

बात समाप्त हो गई पर माता और पिता दोनों ही दुखी थे। उन्हें वैसी प्रसन्नता न थी, जैसी कि होनी चाहिए थी। गुरुकुल से लौटे हुए छात्र जिस शिष्टाचार से गुरु का अभिवादन करते थे और गुरु जिस प्रकार छाती से लगाकर शिष्य के प्रति आत्मीयता भरा आशीर्वाद प्रदान करते थे, वह इस बालक में दिखाई नहीं दिया। राजा द्वारा हाथी पर बिठाकर चँवर डुलाते हुए घर तक लाने का अहंकार जो था भारवि को। इतना अहंकार आ गया कि उसने शिष्टाचार को, विनम्रता को भुला दिया था।

पिता की मुख मुद्रा पर खिन्नता देखकर भारवि माता के पास कारण पूछने गए।

माता ने बताया—"विजयी होने पर लौटने के पीछे तुम्हारे पिता की कितनी साधना थी, यह तो तुम भूल ही गए। शास्त्रार्थ के दसों दिन उन्होंने जल लेकर सफलता के लिए उपवास किया। इससे पूर्व तुम्हें पढ़ाने में कितना श्रम किया इसका तो तुम्हें स्मरण ही नहीं रहा। विजय की अहंता तुम्हारे चेहरे पर झलकती है और प्रणाम इत्यादि भी साधारण रूप में किया।"

भारवि को अपनी भूल प्रतीत हुई। विद्वता का अहंकार गल गया और एक शिष्य एवं पुत्र का जो विनय होना चाहिए, वह उनमें आ गया। माता की आँखों में आँसू आ गए। उन्होंने कहा—"वत्स! तुम्हारी विजय के पीछे पिता की साधना है। उसे विस्मरण मत करो। विद्वता की विजय के पीछे शिष्य को विनयशीलता को भूलना नहीं चाहिए।"

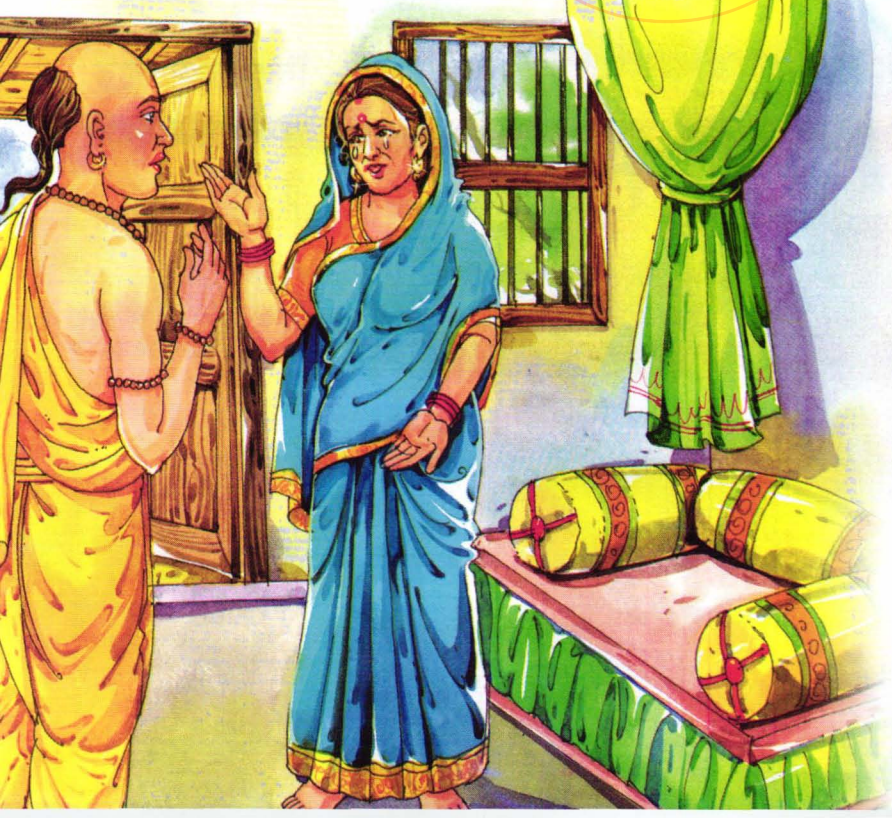

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मैं-मैं ले डूबा

एक शिष्य अपने गुरुजी के दर्शन के लिए घर से चल पड़ा। उसे अपने गुरु पर अपार श्रद्धा थी। रास्ते में एक नदी थी। उसके कारण उसको गुरु तक पहुँचने में कठिनाई आ रही थी। कोई नाव भी नहीं थी। पर जब वह नदी के किनारे पहुँचा तो अपने गुरु का नाम लेते हुए पानी पर कदम रखकर उस पार पहुँच गया।

नदी के दूसरे किनारे पर ही तो गुरु की कुटिया थी। गुरु ने अपने शिष्य को बहुत दिनों बाद देखा तो उनकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। शिष्य चरण स्पर्श के लिए नीचे झुका ही था कि उन्होंने बीच से ही उठाकर गले से लगा लिया। क्षणभर में ही उनका ध्यान भंग हुआ और उन्होंने उससे पूछा—"नदी को कैसे पार किया, वहाँ तो कोई नाव भी नहीं थी?" उसने सब बता दिया। गुरुजी ने सोचा—"मेरे नाम में यदि इतनी शक्ति है तो मैं बहुत ही महान और शक्तिशाली हूँ।" और अगले दिन गुरुजी ने नाव का सहारा न ले कर नदी पार करने के लिए 'मैं, मैं, मैं' कहकर जैसे ही कदम बढ़ाया कि पाँव रखते ही वह नदी में डूबने लगे और देखते ही देखते नदी में डूबकर मर गए। श्रद्धा और विश्वास में बहुत बड़ी शक्ति होती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वृद्ध की ईमानदारी

रवींद्रनाथ टैगोर उन दिनों इंग्लैंड में थे। वे नियमानुसार कड़ाके की ठंढ में सबेरे टहलने निकले तो रास्ते में एक बूढ़ा मिला जो चल नहीं पा रहा था। उसने उस दिन पेट भरने के लिए एक शिलिंग की याचना की। टैगोर ने वृद्ध की दयनीय स्थिति देखी तो उदारतावश एक गिन्नी हाथ पर रख दी और आगे चल दिए।

वृद्ध दौड़ता और पुकारता हुआ आया और गिन्नी लौटाते हुए कहा—"भूल से आप गिन्नी दे गए मैंने तो शिलिंग भर ही माँगा था।"

टैगोर ने कहा—"ऐसा भूल से नहीं हुआ, जान-बूझकर अधिक दान सहायता की दृष्टि से किया गया।" बूढ़े ने तो भी एक शिलिंग ही लिया और कहा—"आप शेष रुपयों से मेरे जैसे अन्य कितने ही असमर्थों को एक दिन का आहार दे सकते हैं। मैं तो उतना ही माँगता हूँ, जिससे हर दिन पेट भरता रहे।" टैगोर वृद्ध की सज्जनता पर चकित थे।

वह चाहता तो पूरी गिन्नी लेकर कुछ दिन आराम से रह सकता था और भीख माँगने के झंझट से बच सकता था। पर उसने ईमानदारी से अपनी आवश्यकता के अनुसार ही धन लिया। ऐसे ईमानदार व्यक्ति ही मनुष्यता का गौरव बढ़ाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफलताएँ टिकी हैं प्रचंड मनोबल पर

विराट नगर के राजा सुकीर्ति के पास लौहशृंग नामक एक हाथी था। राजा ने कई युद्धों में इस पर चढ़कर विजय प्राप्त की थी। बचपन से ही लौहशृंग को इस तरह प्रशिक्षित किया था कि वह युद्ध कला में बड़ा प्रवीण हो गया था।

लेकिन जन्म के बाद जिस प्रकार सभी प्राणियों को युवा और वृद्धावस्था से गुजरना पड़ता है, उसी क्रम से लौहशृंग भी वृद्ध होने लगा, उसकी चमड़ी झूल गई और युवावस्था वाला पराक्रम जाता रहा। अब वह हाथीशाला की शोभा मात्र बनकर रह गया। उपयोगिता और महत्त्व कम हो जाने के कारण उसकी ओर पहले जैसा ध्यान भी नहीं था।

एक दिन बहुत प्यासा होने और कई दिनों से पानी न मिलने के कारण एक बार लौहशृंग हाथीशाला से निकलकर पुराने तालाब की ओर चल पड़ा, जहाँ उसे पहले कभी प्राय: ले जाया जाता था। उसने भरपेट पानी पीकर प्यास बुझाई और गहरे जल में स्नान के लिए चल पड़ा। उस तालाब में कीचड़ बहुत था। दुर्भाग्य से वृद्ध हाथी उसमें

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फँस गया। जितना भी वह निकलने का प्रयास करता उतना ही फँसता जाता और आखिर गरदन तक कीचड़ में फँस गया।

यह समाचार राजा सुकीर्ति तक पहुँचा तो वे बड़े दुखी हुए। हाथी को निकलवाने के कई प्रयास किए गए पर सभी निष्फल। जब सारे प्रयास असफल हो गए, तब एक चतुर सैनिक ने युक्ति सुझाई। इसके अनुसार हाथी को निकालने वाले सभी प्रयत्न करने वालों को वापस बुला लिया गया और उन्हें युद्ध सैनिकों की वेशभूषा पहनाई गई। वे वाद्ययंत्र मँगाए गए जो युद्ध के अवसर पर उपयोग में लाए जाते थे।

हाथी के सामने युद्ध के नगाड़े बजने लगे और सैनिक इस प्रकार कूच करने लगे जैसे वे शत्रुपक्ष की ओर से लौहशृंग की ओर बढ़ रहे हैं। यह दृश्य देखकर लौहशृंग में न जाने कैसे यौवन काल का जोश आ गया। उसने जोर से चिंघाड़ लगाई तथा शत्रु सैनिकों पर आक्रमण करने के लिए पूरी शक्ति से कंठ तक फँसे हुए कीचड़ को रोंदता हुआ तालाब के तट पर जा पहुँचा और शत्रु सैनिकों पर टूट पड़ने के लिए दौड़ने लगा। बड़ी मुश्किल से उसे नियंत्रित किया गया।

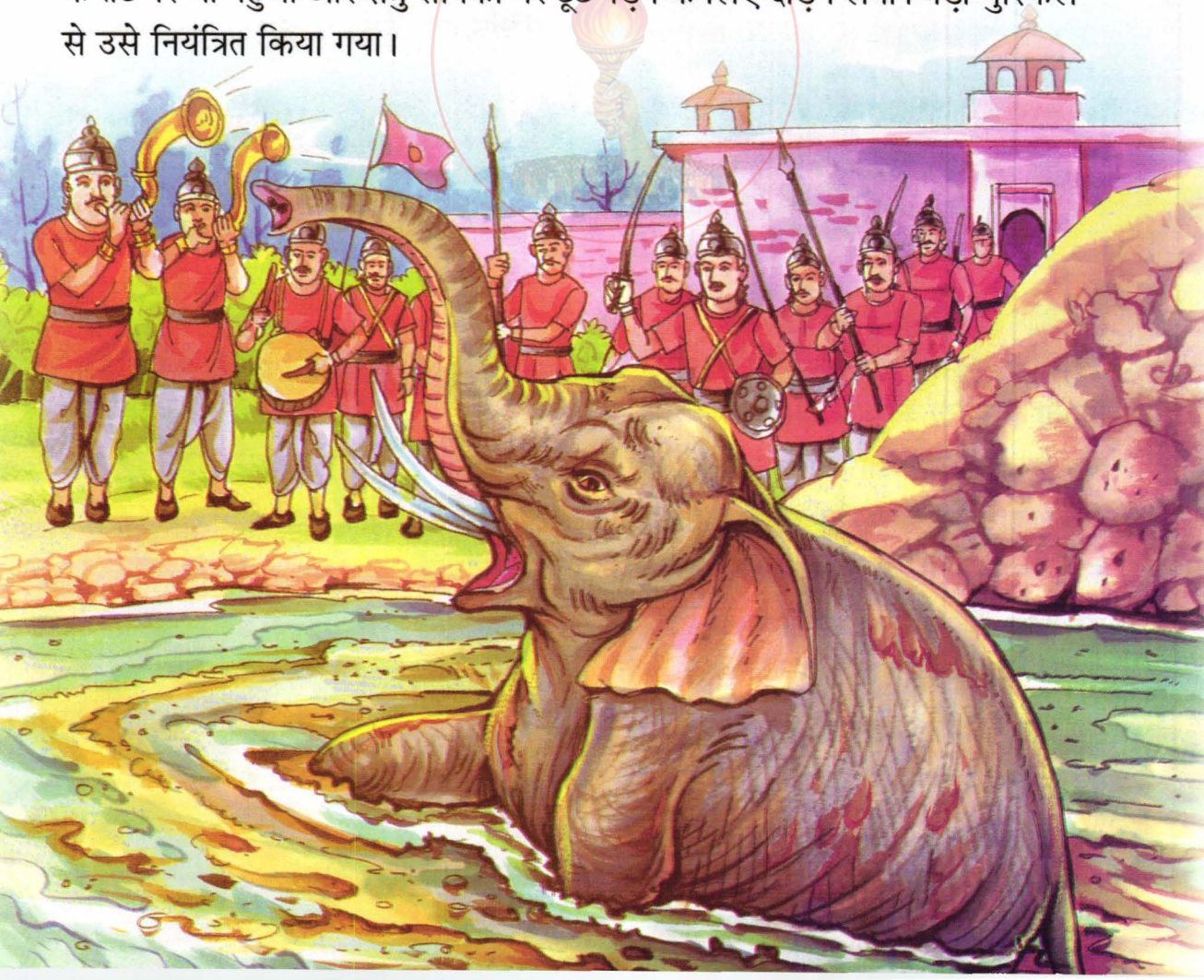

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वाभिमानी देशभक्त

कोर्ट मार्शल के सम्मुख तात्या टोपे को उपस्थित करने के बाद अँगरेज न्यायाधीशों ने पूछा—"यदि तुम चाहो तो अपने बचाव में कुछ कह सकते हो।" तात्या टोपे का स्वाभिमान जाग उठा। उनने कहा—"मैंने ब्रिटिश शासन से टक्कर ली है। मैं जानता हूँ कि इसके बदले में मुझे मृत्युदंड प्राप्त होगा। मैं केवल ईश्वरीय न्याय और न्यायालय में ही विश्वास रखता हूँ, इसलिए अपने बचाव के लिए मैं कुछ नहीं कहना चाहता।" तात्या को जब फाँसी-स्थल पर ले जाया गया तो उनने कहा—"तुम लोग मेरे हाथ-पैर बाँधने का कष्ट क्यों करते हो? लाओ फाँसी का फंदा मैं स्वयं ही अपने गले में डाल लूँ।" इन अंतिम शब्दों के साथ सन् सत्तावन के स्वतंत्रता संग्राम का वह सेनानी अमर हो गया।

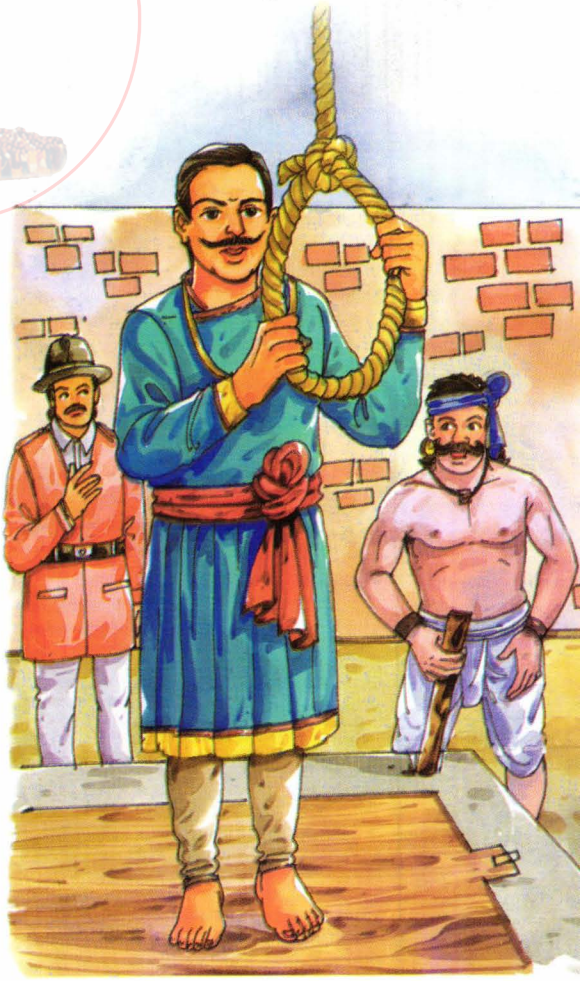

देश पर मर मिटने वालों का नाम अमर हो जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान एवं वैराग्य की मूर्च्छना

नारद जी कलियुग का क्रम देखते हुए एक बार वृंदावन पहुँचे। देखा, एक युवती के पास दो पुरुष मूर्च्छित पड़े हैं। दुखी युवती ने नारद जी को बुलाया। पूछने पर बतलाया, "मैं भक्ति हूँ। मेरे ये दो पुत्र ज्ञान और वैराग्य असमय में वृद्ध हो गए और मूर्च्छित पड़े हैं। इनकी मूर्च्छा दूर करें तो मेरा दु:ख दूर हो।" नारद जी ने उनकी मूर्च्छा दूर करने का प्रयास किया। वेदादि के पाठ से सामान्य हलचल शरीरों में हुई, पर मूर्च्छा नहीं टूटी। नारद जी दुखी होकर प्रार्थना करने लगे। आकाशवाणी हुई—"हे नारद! आपका प्रयास उत्तम है, किंतु मात्र वेदपाठ से इनकी मूर्च्छा दूर नहीं होगी, संतों से परामर्श करके कुछ सत्कर्म करो तो ज्ञान-वैराग्य भी प्रतिष्ठापित हों।"

नारद जी ने तमाम संतों से पूछा—"क्या सत्कर्म करें जिससे इनकी मूर्च्छा टूटे?" कहीं समाधान न मिला। अंत में बदरी विशाल क्षेत्र में सनकादि मुनियों से भेंट हुई। उन्होंने सारी बात सुनी, तो कहा—"नारद जी! आपकी भावना दिव्य है। कलि के प्रभाव से मूर्च्छित ज्ञान-वैराग्य की मूर्च्छा दूर करने के लिए ज्ञानयज्ञ ही एकमात्र ऐसा सत्कर्म है, जिसका प्रभाव निश्चित रूप से होगा। ज्ञान यज्ञ के लिए वेदादि का उपयोग भी ठीक है, पर वह कलियुग में लोगों की समझ में आएगा नहीं। अत: आप कथा के माध्यम से ज्ञानयज्ञ करें, वह निश्चित रूप में सफल होगा।"

नारद जी सनत्कुमारों के साथ गंगा के किनारे आनंदवन में गए। वहाँ पवित्र वातावरण में उन्होंने ज्ञान यज्ञ का, कथा-दृष्टांतों के माध्यम से धर्म धारणा के विस्तार हेतु शिक्षण का शुभारंभ किया। और इस तरह जगह जगह कथा भागवत होने लगी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चिंता से छुटकारा

एक करोड़पति थे। वे दिन-रात चिंता में डूबे रहते, सो उनकी नींद गायब हो गई। कारण यह था कि इनकम टैक्स का छापा पड़ा था और दोहरे बहीखाते पकड़े गए थे। इस केस में १० लाख तक जुरमाना हो सकता था। यही भय उन्हें खाए जा रहा था। एक विचारशील उनके मित्र थे। वे आए और घुल-मिलकर बातें हुईं। उसने पूछा—"आपकी कुल संपत्ति कितनी है ?" बताया गया—"लगभग एक करोड़।" पूछा गया—"इसमें से यदि दस लाख चले भी जाते हैं, तो कितना बचता है ?" उत्तर था—"९० लाख।"

विचारशील ने कहा—"१० लाख के घाटे से आप भयभीत हैं और ९० लाख फिर भी आपके पास शेष रह जाने की प्रसन्नता आपको क्यों नहीं होती ? उतने पर संतोष क्यों नहीं करते ?"

सेठजी ने नए सिरे से विचार आरंभ किया और उन्हें दूसरे दिन से ही गहरी नींद आने लगी। ऐसी बीमारी जो किसी भी इलाज से ठीक नहीं हो सकी, वह एक सुंदर विचार से ही ठीक हो गई। सोचने का तरीका बदला गया था।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विवेकशील नचिकेता

वाजिश्रवा ने एक बार सर्वमेध यज्ञ किया और उसमें अपनी सारी संपदा एवं गायें दान कर दीं। गायों में कुछ वृद्ध, अपंग और निकम्मी भी थीं। उन्हें ले जाने में, ले जाने वाले को उलटी कठिनाई उठानी पड़ती। बालक नचिकेता यह सब देख रहा था। उसने पिता वाजिश्रवा से अनुरोध किया—"जो श्रेष्ठ-सार्थक है उसी का दान करें।" वाजिश्रवा क्रुद्ध होकर बोले—"तुम्हीं सार्थक हो, तुम्हें मैं यमराज को दान करता हूँ।" पिता ने पुत्र नचिकेता को यमराज को दान में दे दिया। यमराज के यहाँ रहकर अध्ययन द्वारा नचिकेता ने अपना ज्ञान और भी आगे बढ़ाया। वे गुरुकुल में सममित भाव से रहे और पंचाग्नि विद्या में कुशलता प्राप्त करके ही रहे।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिपाही की ड्यूटी क्यों ?

बात उन दिनों की है, जब रूस में जार अलेक्जेंडर का शासन था। एक दिन प्रशा के राजदूत बिस्मार्क जार से भेंट करने उनके महल पर गए। बिस्मार्क जहाँ बैठे थे, उसके ठीक सामने खिड़की पड़ती थी, जिससे बहुत पीछे तक का बाहरी दृश्य भी वहाँ से अच्छी तरह दिखाई दे रहा था। बिस्मार्क ने देखा कि बहुत देर से एक रायफलधारी संतरी मैदान में खड़ा है, जबकि रक्षा करने जैसी कोई भी वस्तु वहाँ नहीं है। शांतिकाल था इसलिए सैनिक गश्त जैसी कोई बात भी नहीं थी। बड़ी देर हो गई,तब बिस्मार्क ने जार से पूछा—"यह संतरी क्यों खड़ा है ?" जार को स्वयं भी पता नहीं था कि संतरी वहाँ किस बात का पहरा दे रहा है ?

जार ने अपने अंगरक्षक सेनाधिकारी को बुलाया और पूछा—"यह संतरी इस पीछे के मैदान में किसलिए नियुक्त किया जाता है ?" सेनाधिकारी ने बताया—"सरकार! यह बहुत दिनों से ही यहाँ खड़ा होता चला आ रहा है।" जार ने थोड़ा कड़े स्वर में कहा—"यह तो मैं भी देख रहा हूँ। मेरा प्रश्न यह है किसलिए खड़ा होता है ? जाओ और पता लगाकर पूरी बात मालूम करो।"सेनाधिकारी को कई दिन तो यह पता लगाने में ही लग गए। एक दिन सारी स्थिति का पता कर वह पुनः जार के सम्मुख उपस्थित हुआ और बताया—"पुराने सरकारी कागजात देखने से पता चला है कि ८० वर्ष पहले महारानी कैथरीन के आदेश से एक संतरी वहाँ खड़ा किया गया था। बात यह थी कि एक दिन जब घूमने के लिए निकलीं, तब इस मैदान में बरफ जमा थी। सारे मैदान में एक ही फूल का पौधा था और फूल की सुरक्षा के लिए तत्काल वहाँ एक संतरी खड़ा करने का आदेश दिया और इस तरह वहाँ यह परंपरा ही चल पड़ी जो आज तक निभाई जा रही है।"

जो प्रथा या परंपरा आज बेकार है, उसे छोड़ देना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर दर्शन कैसे

एक युवक किसी संत के पास जाया करता था और रोज ही उनसे ईश्वर दर्शन का उपाय पूछा करता था। महात्मा जी कभी अवसर आने पर बताने की बात कहकर उसे टाल दिया करते थे। एक दिन युवक ने बहुत खुशामद की तो महात्मा जी ने पहाड़ की ऊँची चोटी की ओर इशारा करते हुए कहा—"तुम वहाँ तक मेरे साथ छह पत्थर सिर पर रखकर चल सको तो वहाँ पहुँचकर मैं तुम्हें उपाय बता सकता हूँ।"

युवक तैयार हो गया। संत जी ने छह पत्थर उसके सिर पर रख दिए और पीछे-पीछे चले आने का इशारा करके वे आगे चलने लगे। कुछ ही दूर चला कि युवक हाँफने लगा। उसने महात्मा जी से कहा—"भगवन्! बोझा बहुत है। इतने भार को लेकर मैं आगे नहीं चल सकता।" संत ने एक पत्थर उतार दिया। युवक चलने लगा पर कुछ दूर जाकर वह फिर लड़खड़ाने लगा। एक पत्थर और उतारना पड़ा। यही क्रम आगे भी चला। कुछ दूर चलने पर वह थक गया और संत जी को एक पत्थर और उतारना पड़ा। अंत में सभी पत्थर उतार देने पड़े, तब कहीं वह चोटी तक साथ चल सकने में सफल हो सका।

चोटी पर पहुँचकर संत ने कहा—"भाई! जिस प्रकार तुम छह पत्थर सिर पर रखकर चोटी तक पहुँच सकने में समर्थ न हुए, उसी प्रकार जीव काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर जैसे मन के दोष-दुर्गुणों का भार ढोता हुआ ईश्वर दर्शन में सफल नहीं हो सकता। यदि ईश्वर तक पहुँचना हो तो मन के सभी दोष हटाने पड़ेंगे। जिस दिन ये पत्थर हट जाएँगे उस दिन मनुष्य अपने आप आनंदित हो उठेगा।"

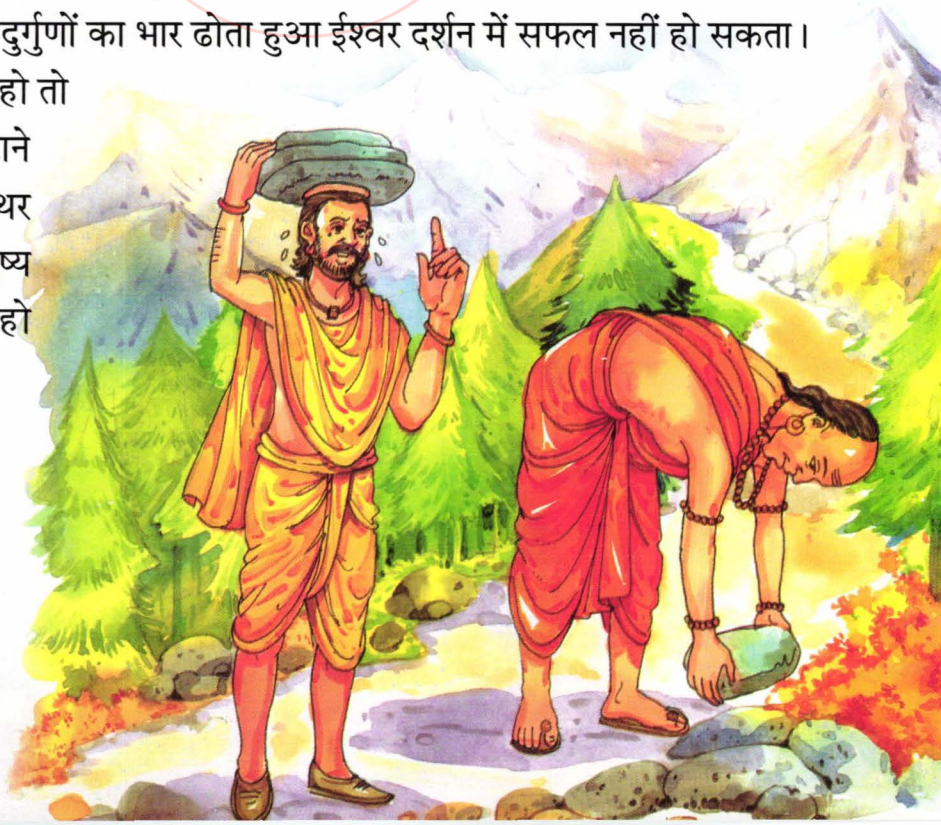

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहले आत्मबल तब वरदान

कुछ व्यक्ति एक वटवृक्ष के नीचे बैठे वार्तालाप कर रहे थे। सभी दुनिया के झंझटों से परेशान होकर भाग आए थे और साधु होने जा रहे थे। तब एक ने कहा—"हम सब मिलकर जंगल में रहेंगे और तपस्या करेंगे, लेकिन यह तो सोचो कि जब ईश्वर वरदान माँगने को कहेगा तो माँगोगे क्या?" दूसरे ने कहा—"अन्न माँगेंगे। उसके बिना जीवित रहना संभव नहीं।" तीसरे ने कहा—"बल माँगेंगे। बल के बिना सभी कुछ निरर्थक है।" चौथे ने कहा—"बुद्धि माँगना ज्यादा उचित है। बुद्धि की आवश्यकता प्रत्येक कार्य को करने के पूर्व होती है।" पाँचवाँ बोला—"ये सब वस्तुएँ तो सांसारिक हैं। आत्मशांति माँगेंगे जो अंतिम लक्ष्य है मनुष्य का।"

तब पहले व्यक्ति ने कहा—"तुम सब मूर्ख हो। क्यों न हम स्वर्ग ही माँग लें। वहाँ सब चीजें एक साथ मिल जाएँगी।" यह सुनकर विशाल वट वृक्ष ठहाका लगाता हुआ बोला—"मेरी बात मानो, तुम लोगों से न तपस्या होगी न उपलब्धियाँ प्राप्त होंगी, क्योंकि यदि इतना ही मनोबल होता तो संसार से घबराकर न भागते। भगवान के पास जाने के लिए असाधारण आत्मबल चाहिए, पहले उसकी साधना करो। फिर आगे की बात सोचना।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कन्फ्यूसियस का आदर्श

चीन के महामानवों में कन्फ्यूसियस का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। आरंभ में वे सरकारी मंत्री पद पर थे। किसी बात पर सरकार से अनबन होने के कारण उन्हें वह नौकरी छोड़नी पड़ी। बाद में उनने एक विद्यालय चलाया। उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली और राजकुमार तक पढ़ने आने लगे।

चीन के राजा ने उन्हें सहायता देनी चाही और आकर पूछा—"आपको किसी वस्तु की आवश्यकता है?" उन्होंने उत्तर दिया—"पेट को रोटी, पहनने को कपड़ा मिल जाता है। इसके बाद मुझे क्या चाहिए?"

वे वेतन न लेकर भी सरकार को अनेक सलाह भी देते रहे। उन्हें एक आदर्श नगर बसाने का काम सौंपा गया जो उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया। उस नए बसाए हुए नगर की सारे चीन में चर्चा होती रही।

कन्फ्यूसियस ने नीति और सदाचार पर एक ग्रंथ लिखा है। उसे उन दिनों उस देश में धर्मशास्त्र की तरह पढ़ा जाता था। आज भी वह ग्रंथ हमारा पथ प्रदर्शन करता है।

महामानव स्वार्थ, पद, प्रतिष्ठा से दूर रहकर समाज की सेवा में लगे रहते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सच्चा आत्मज्ञान

एक बार जगतगुरु शंकराचार्य काशी में गंगा स्नान करके सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे कि अचानक एक चांडाल से वे छू गए। तब उन्होंने आवेश में आकर कहा—"अरे! क्या तूने मुझे छू लिया, जानता नहीं मैं गंगा स्नान करके आ रहा हूँ।" चांडाल ने कहा—"महाराज! न मैंने आपको छुआ न आपने मुझे। सभी में वह अंतर्यामी निर्लिप्त आत्मा निवास करती है। गंगाजल में पड़ा हुआ सूर्य का प्रतिबिंब क्या शराब में पड़े प्रतिबिंब से अलग होता है?" चांडाल की ज्ञानपूर्ण बातें सुनकर शंकराचार्य स्तब्ध रह गए। उन्हें अपनी भूल का अनुभव हुआ। उन्होंने चांडाल को गुरु मानकर प्रणाम किया। आज उन्हें सही रूप से आत्मज्ञान हुआ था। उन्होंने तभी से सबमें आत्म-तत्त्व के दर्शन किए, बाह्य भेद-विभेद भूलकर परमात्मतत्त्व को जाना।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आत्मज्ञान होने पर भेद-विभेद नहीं रहते। सूक्ष्म दृष्टि हो जाने पर स्थूल जगत के भेदभाव नहीं रह जाते। वे एक ही समुद्र की लहरों से निर्मित बबूले नजर आते हैं।

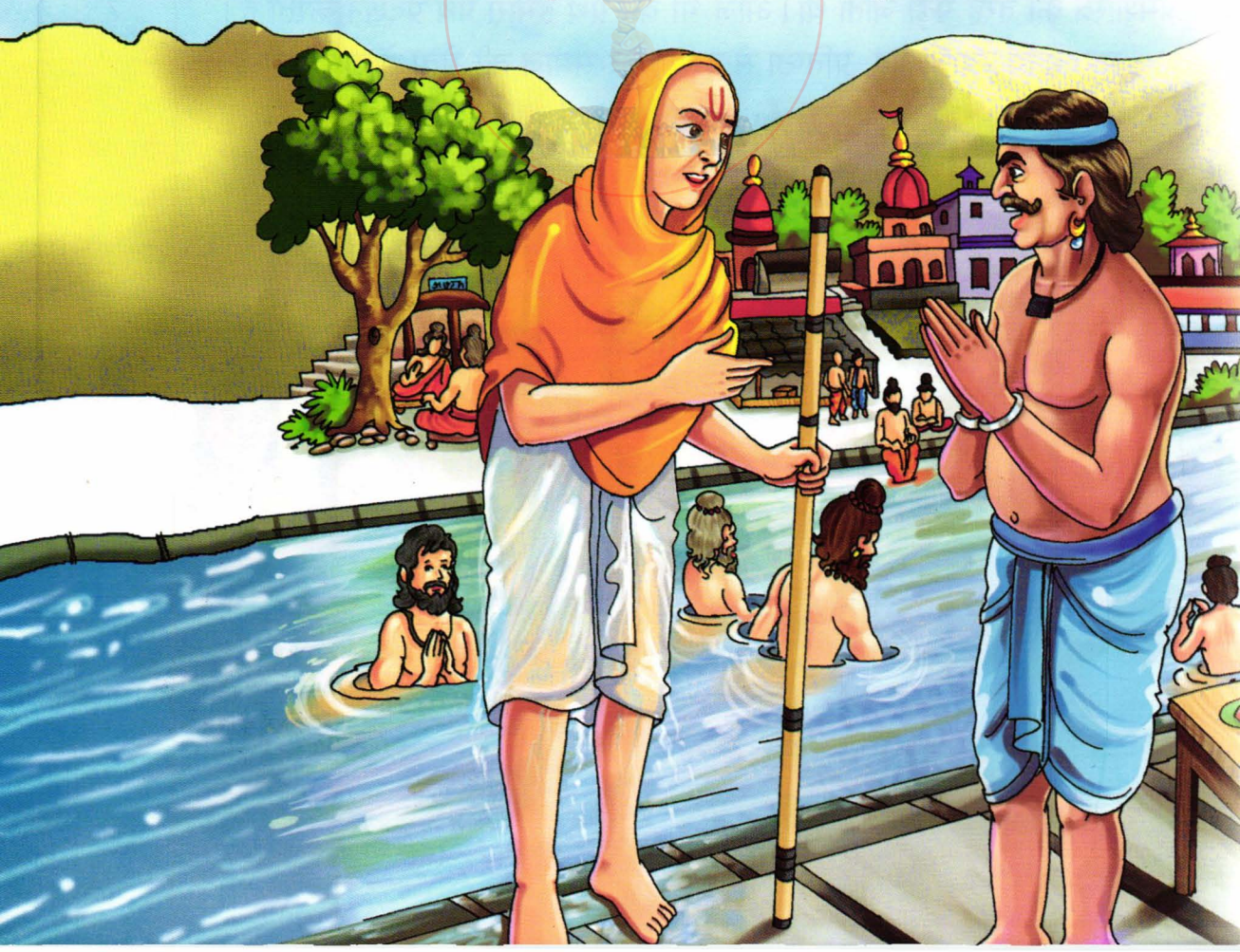

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org